छापना P.G-sem-III, CC-12

घाटे का बजट द्वारा आर्थिक स्थिरता को प्राप्त करना

मंदी के दौरान सार्वजनिक व्यय में वृद्धि वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए कुल माँग को बढ़ाती है, और गुणक प्रक्रिया के मार्ग से आय में बड़ी वृद्धि करती है। जबकि करों में कमी का प्रभाव यह होता है कि प्रयोज्य आय बढ़ती है जिसके परिणामस्वरूप लोगों के उपभोग तथा निवेश व्यय बढ़ जाते हैं। इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

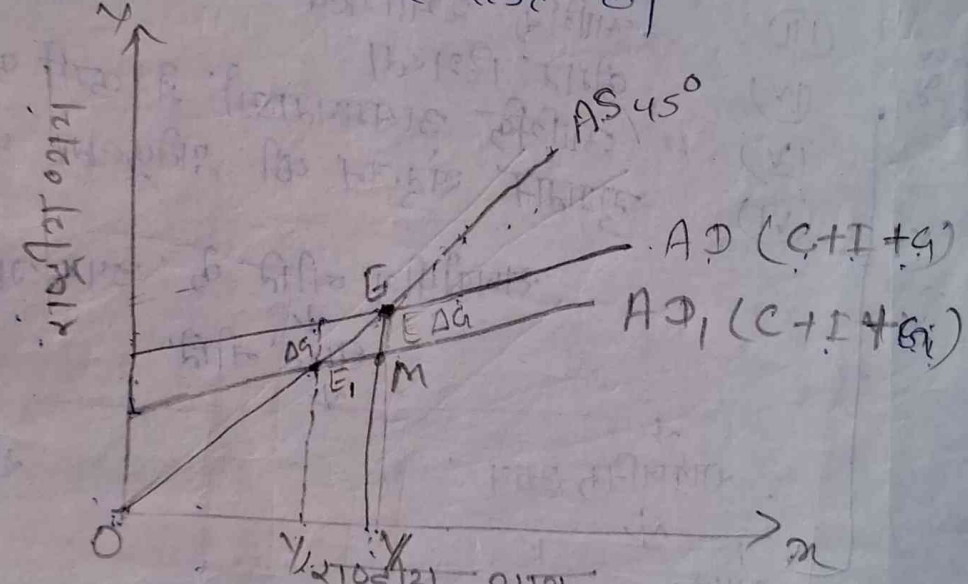

यहाँ AS = कुल पूर्ति

AD = कुल माँग

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि का मानचित्र

जब देश में मंदी होती है तो समग्र माँग AD से सरककर AD_1 पर आ जाती है। इस स्थिति में राष्ट्रीय आय OY से OY_1 हो जाता है।

समग्र माँग EM के बराबर घट चुका है जिसे विस्फीति अन्तराल कहते हैं।

जब सरकार अपना ΔG के बराबर अपना सार्वजनिक व्यय बढ़ाता है जिसे गुणक राष्ट्रीय आय एवं समग्र माँग में वृद्धि कर देगा। जिससे अर्थव्यवस्था पूर्व संतुलन E पर कार्य करने लगेगा।

बजट घाटा के द्वारा करों में कमी द्वारा मंदी से अर्थव्यवस्था को छुटकारा दिलाया जा सकता है। जिससे लोगों का प्रयोज्य आय बढ़ जाता है और वह उपभोग-व्यय को प्रेरित करता है। इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं

इसे पुनः नहीं लिखें

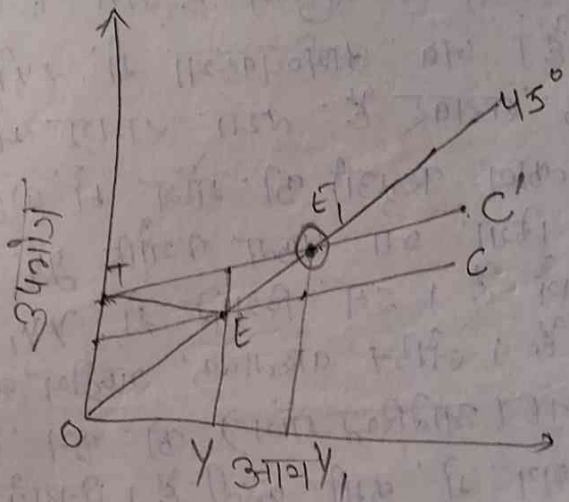

यहाँ C मूल उपभोग फलन है। मान लेते हैं कि ET मात्रा घटा दी जाती है तो उपभोग फलन ऊपर की ओर सरक C' पर पहुंच जाएगा और OY से बढ़कर आय OY_1 हो जाएगी।

संचित के बजट द्वारा आर्थिक स्थिरता को प्राप्त करना

→ जब अर्थव्यवस्था में स्फीति उच्च स्तर पर होती है तो संचित के बजट द्वारा सार्वजनिक व्यय में कटौती कुल माँग, राष्ट्रीय आय, रोजगार, उत्पादन तथा कीमतों को घटा देती है, जबकि करों में वृद्धि प्रयोज्य (disposable) आय को घटाती है और परिणामस्वरूप उपभोग तथा निवेश व्ययों को कम कर देती है इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

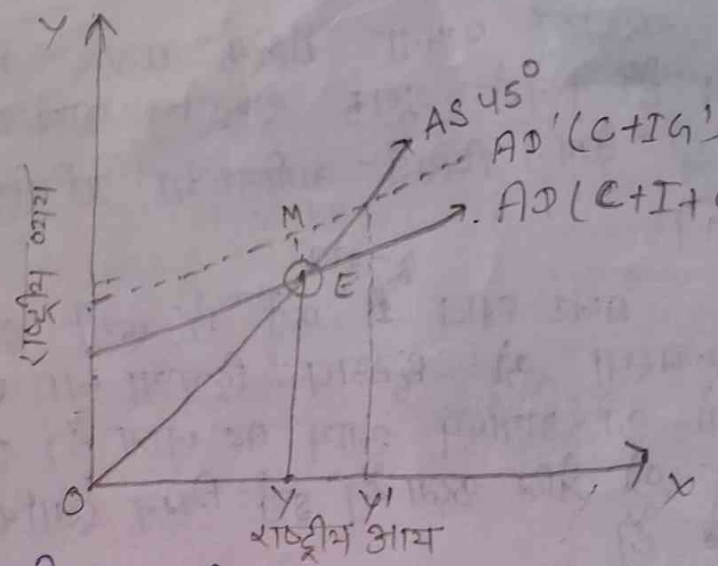

जब अर्थव्यवस्था में संतुलन है तब E बिन्दु पर AS=AD कि स्थिति है। जब अर्थव्यवस्था में स्फीतिक उत्पन्न होती है जो ME के बराबर है तथा समग्र माँग AD' हो जाता है, जिससे तत्काल वस्तुओं की माँग में वृद्धि को समग्र पूर्ति द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता क्योंकि पूर्व में ही समस्त संसाधन समग्र पूर्ति में लगे है। इस स्थिति में YY_1 के बीच मौद्रिक राष्ट्रीय आय बढती है। लेकिन वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं होती है। अतः ME (अतिरिक्त माँग) को कम करने के लिए सरकार सार्वजनिक व्यय में कमी करती है। जिससे AG में कमी होने से पुनः समग्र माँग AD पर होगा तथा E बिन्दु संतुलन बिन्दु होगी।

करो में वृद्धि द्वारा लोगो को प्रयोज्य आय को घटाते हुए उपभोग व्यय में कमी निम्न रेखाचित्र द्वारा समझ सकते है।

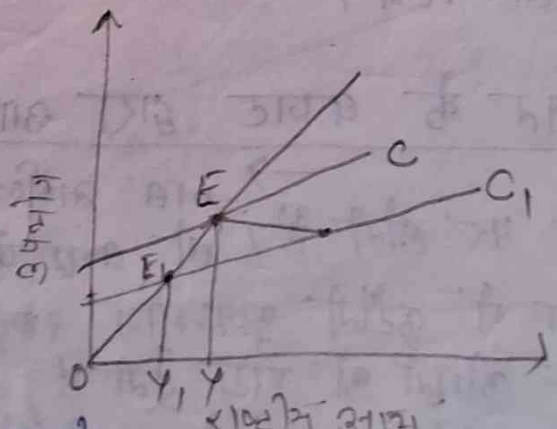

कर लगाने से पहले C उपभोग फलन है माना लेते है कि ET के बराबर कर लगाया गया तो उपभोग फलन नीचे की ओर सरक कर C_1 पर आ जाता है। नई संतुलन E_1 है।